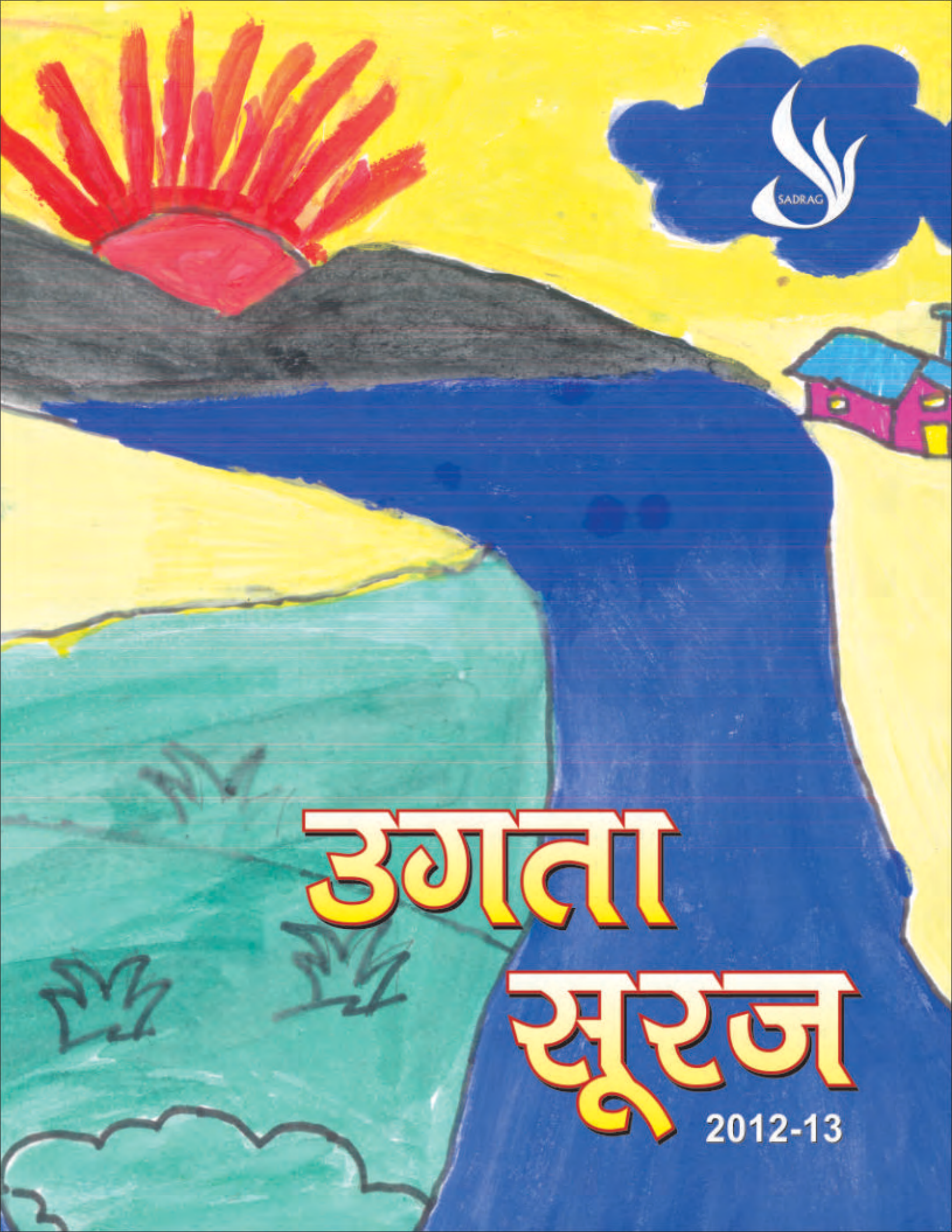
SADRAG
उगता सूरज
2012-13

उगता सूरज गान

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

देखो हमने पढ़ना सीखा
हर मुश्किल से लड़ना सीखा।
आओ तुम भी बच्चों आओ
और हमारे संग में गाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

दिल में ये अरमान जगाओ
घर–घर में शिक्षा अपनाओ।
कोई बच्चा छूट ना जाये
घर–घर में आवाज लगाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

पढ़ो लिखो इंसान बनो तुम
अपने देश की जान बनो तुम
सब बच्चों को ये बतलायें
किरणों से भी आगे बढ़ जायें।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

मेरी ओर से.....

वर्ष 2012 बीत गया और कब हमने वर्ष 2013 में कदम रखा, हमें पता ही नहीं चल सका। कारण बहुत सरल है उगता सूरज की रोशनी में कब सुबह और कब शाम होती है हमें पता ही नहीं चल पाता। इसी रोशनी को फैलाने के लिए हमारी संस्था गत 7 वर्षों से कोशिश कर रही है आज करीब 1000 बच्चे उगता सूरज की तपश में तपकर विभिन्न स्कूलों में अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इनमें कितने ही बच्चे बाल श्रम की दुनिया को छोड़कर आज स्कूल और शिक्षा की दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं। उगता सूरज पत्रिका इन्हीं बच्चों की जिन्दगी, प्रतिभा, कौशल और सुख-दुःख को दर्शाती हैं। यह एक ऐसा मंच है जहां हर बच्चा अपनी बात को आपके सामने रख सकता है, आपके साथ निर्भय होकर बांट सकता है। यह एक ऐसा मंच है जो बच्चों की मानसिक उन्नति और आत्मविश्वास को बढ़ा सकता है।

यह जरूरी नहीं है कि सरकारी स्कूल बच्चों की शिक्षा की हर जरूरत को पूरा करने में खरा उतरें। बहुत सी कमियां पाई गई हैं जिसके कारण बच्चे सरकारी स्कूल में भर्ती तो होते हैं लेकिन कुछ छोड़ देते हैं या फिर पढ़ना, लिखना और जरूरी हिसाब-किताब को समझने में असमर्थ रहते हैं। इसे हम हमारे सरकारी स्कूल प्रणाली की असमर्थता कहें या हमारे में ही शिक्षा की तरफ लापरवाही! कारण कोई भी हों पर आखिरकार बच्चे सही शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। शिक्षा के अधिकार कानून (RTE) के तहत हमारी स्कूल शिक्षा प्रणाली को कई कदम उठाने की आवश्यकता है। हम सबको मिलकर इस दिशा में काम करना हैं।

उगता सूरज की उन्नति उसके बच्चों में हैं। आज जब बच्चे शिक्षा में आगे बढ़ रहे हैं उनकी जिम्मेदारी अपने प्रति ही नहीं अपने भाई-बहनों के प्रति भी बनती हैं ताकि वे भी इनके साथ-साथ शिक्षा को अपना सकें और एक अच्छी जिन्दगी की तरफ बढ़ सकें।

उगता सूरज बच्चों के साथ बहुत से लोग संस्थाएं और संसाधन जुड़े हुए हैं। हमारी कोशिश रहती है कि अधिक से अधिक लोग हमारे साथ जुड़ें और हम उगता सूरज को हर जगह पहुंचा सकें। इसी के साथ हम आपसे विदा लेते हैं और आशा करते हैं कि आपको उगता सूरज बच्चों की यह पहल अच्छी लगेगी।

अगले वर्ष के लिए शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. माला भण्डारी
अध्यक्ष
सदरग

7/12/10
Anjali
Age - 12
Nagla

Ugta Suraj

I feel very proud to be associated with Ugta Suraj. Ugta suraj is a programme where we educate children to face their upcoming challenges. When these children are enrolled in our centers, some of them even don't know to hold the pencil but hard work and dedication of our facilitators make them able not only to hold the pencil but also read and write.

Like the sun spread his rays to every part of the world and is available for every section of the world whether they are rich or poor similarly we the Ugta Suraj members are always available for the children who want to learn, read and write.

Through Ugta Suraj programme, we make sure that every child gets his/her right to education. We prepare our children to spread the rays of their knowledge.

It is truly said by Carol Bellamy that "Creating a world that is truly fit for children does not imply simply the absence of war ... it means having primary school nearby that educate children free of charge ... it means building a world fit for children, where every children can grow to adulthood in health, peace, and dignity".

Charchika Vijaya
Project coordinator
Ugta Suraj

रिना चौबे

फैसिलिटेट्र-बरौला, सेक्टर-49

हर सुबह का सूरज शाम को ढ़ल जाता है। लेकिन लालिमा मुस्कार लिए कुछ कह जाता है। सुबह और शाम की कहानी ही इंसान की जिन्दगी है। जिसके अन्त:स्थल में बैठा अमर सुहाग संजीवनी है।

जाग सके तो जाग, सूरज उगता है।
सूरज उगता ही रहता है।।

सारा समाज डोल रहा है,
दहेज नाम की बोली से,
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या
लौट न पाई डोली से
जितने गरीब की बेटी है
वो दहेज कहां से लाएगी
अपने जिगर के टुकड़े को
कैसे सलामत रख पाएगा
दहेज प्रथा के नाम पर
कितने सारे अभियान चले
पर बच नहीं पाती फिर भी बेटी
जो दहेजी भेड़ियों के हाथ चढ़ी

मेरा नाम रिना चौबे है!
मैं जिला वक्सर बिहार की रहने वाली हूं।
मैं 25-7-2012 को उगता सूरज (सदरग) से जुड़ी हूं और मुझे संस्था से जुड़े एक साल हो गया जिसका अनुभव मुझे काफी अच्छा लगा मुझे गरीब बच्चों को पढ़ाना या उनके लिए कुछ करना बहुत अच्छा लगता है।
मैं इस संस्था को धन्यवाद देती हूं जो मुझे गरीब बच्चों के लिए कुछ करने का मौका मिला।

नीर-क्षीर

चर्चिका विजया
प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर, सदरग

यह तेनाली राम और कृष्णदेव राय की कथा नहीं है, परन्तु उनकी चारित्रिक स्वीकार्यता के कारण उन्हीं पात्रों के माध्यम से यह कथा प्रस्तुत है। किसी राज्य में एक प्रतापी राजा था। वह प्रजा का बहुत ध्यान रखने वाला तथा बहुत ही अनुशासित, कर्मठ एवं लोकप्रिय था। परन्तु कुछ वर्षों से उसके राज्य का विकास बिल्कुल अवरुद्ध था। राजा ने अथक प्रयास किए, दरबारियों को कर्मठ होने का आदेश दिया गया और इस विश्वास के साथ कि यह राज्य के भाग्य परिवर्तन में भी सहायक होगा, कर्मठता के लिए प्रोत्साहन व पदोन्नति भी दी, परन्तु दशा ज्यों की त्यों बनी रही। राजा ने कई बैठकें की, विद्वानों से विचार-विमर्श किया, लेकिन परिणाम आशा के विपरीत ही रही। दरअसल राजा झक की हद तक अनुशासन प्रिय था। सामान्य गलतियों के लिए दरबारियों को अप्रतिष्ठि और उन्हें पदच्युत करना ही राजा अनुशासन पालन का तरीका समझता था। कभी किसी दरबारी के किसी अपराध में प्रत्यक्ष लिप्तता नहीं होने पर भी उन्हें भीषण सजा देता था। यही कारण था, कि सभी कर्मचारी सजा के डर से अकर्मण्य होने लगे। राज्य के हित में भी किसी प्रकार का निर्णय लेने से दरबारी कतराने लगे ताकि कोई गलती न हो जाए और सजा का पात्र बनना पड़े। उनका यह सिद्धांत बनने लगा कि न काम करेंगे, न कोई गलती होगी और न ही सजा मिलेगी। समूचे राज्य में निराशा फैली हुई थी। राज्य का विकास ठप्प हो गया। इससे राजा के साथ-साथ उसके दरबारी भी परेशान रहने लगे।

राज्य में एक पुराने दरबारी जो वार्धक्य के कारण अवकाश ग्रहण कर चुके थे, उन्हें स्थिति का ज्ञान हुआ। दरबारी वस्तु-स्थिति की जानकारी के लिए भिन्न-भिन्न राजकीय कार्यालयों में गया। वहां उन्होंने देखा कि उसके समय के ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी अपनी छोटी-बड़ी गलतियों के कारण उपेक्षित पड़े हैं और ऐसे चाटुकार, खुशामदी जिनका राज्य के विकास में कोई भी योगदान नहीं था, उच्च पदों पर आसीन थे। समूचे राज्य में अकर्मण्यता पोषित हो रही थी क्योंकि जो भी बढ़-चढ़ कर कार्य करता था, उसे शंकित दृष्टि से देखा जाता और छिद्रान्वेषण करके उसे गलतियों का कारक बताकर सजा दे दिया जाता। कुछ लोग ऐसे भी थे, जिन्होंने अपने योग्य, वरीय अधिकारियों को उत्साह के कारण उपेक्षित होते हुए देखा था और फिर उससे सबक लेकर स्वयं भी निरुत्साहित हो गए थे।

इस संबंध में राजा के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए राजा को परामर्श दिया कि वह वेश बदलकर राजकीय कर्मचारियों व उनके कार्यों के विषय में पता लगाए। राजा ने सहमति दी और दोनों वेश बदलकर एक प्रमुख राजकीय कार्यालय में पहुंचे। कार्यालय की हालत इस प्रकार थी जैसे कि वह वर्षों से बंद पड़ा हो और विडंबना यह थी कि सभी कर्मचारी अपने-अपने सीट पर मुस्तैद थे। वेश परिवर्तित वृद्ध दरबारी ने जाकर कार्यालय प्रमुख से निवेदन किया कि मुझे एक राजकीय सहायता की आवश्यकता है, किन्तु मेरा आवेदन स्वीकार नहीं किया जा रहा है। कार्यालय प्रमुख ने उन्हें सादर बैठाया और बताया कि राजकीय नियमों के अनुसार यदि कोई कार्मिक सामान्य गलती करें, तो उसकी सजा बड़ी विकट और भीषण होती है, चूंकि कार्य न करने पर कोई दण्डात्मक कार्यवाही भी नहीं होती एवं प्रोन्नति भी मिल जाती है, फिर ऐसी स्थिति में कार्य का जोखिम उठाना तो बेवकूफी ही होगी। इसलिए महाशय से निवेदन है कि वह अपना आवेदन राजा को स्वयं प्रस्तुत करें, कम से कम हम कर्मचारियों पर कोई विपदा आने की आशंका तो नहीं होगी। पास बैठे राजा को बड़ा क्रोध आ रहा था, परन्तु इस समय वस्तु-स्थिति की जानकारी अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हो रहा था।

दरबारी ने राजा की ओर इशारा किया और चलने के लिए कहा। उसी कार्यालय में ही कुछ दूरी पर एक अन्य कर्मचारी, जो कार्यालय प्रमुख तथा उनके बीच हुई बातचीत से अनभिज्ञ था, के पास गए। दरबारी उसके समीप बैठकर अपने आवेदन की बात दुहराई। वहां उस कर्मचारी ने बताया कि अब मैं किसी का आवेदन स्वीकार नहीं करता। क्योंकि इससे पहले मैं जिस कार्यालय में पदस्थ था, राज्य के विकास के लिए जी-तोड़ परिश्रम की और राजा आज भी देख सकते हैं कि उस क्षेत्र का कैसा विकास हुआ, परन्तु मुझसे एक गलती क्या हुई, मुझे दण्डित किया गया और बड़ी मुश्किल से नौकरी बची। अब मैं आवेदन को स्वीकार करके पुनः खतरे में नहीं पड़ना चाहता। इस कार्यालय में उपस्थित सभी कर्मचारियों का नजरिया भी लगभग मेरी तरह ही है, अतः आप यहां अपना समय नष्ट न करें, कर्मचारी ने दरबारी और राजा को बताया।

दरबारी राजा को एक अन्य राजकीय कार्यालय में ले गया और वहां भी उसने आवेदन की बात दुहराई। वहां के कार्यालय प्रमुख ने हंसकर कहा कि मेरे जिन-जिन सहकर्मियों ने प्रजा के आवेदनों पर विचार किया और विकास का मॉडल प्रस्तुत किया, अपनी जोश और निष्ठा के कारण सामान्य सी गलती पर अपमानित भी हुए और उन्हीं चार वर्षों में मैंने कोई कार्य नहीं किया, तो गलती होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस दौरान मैं दो बार प्रोन्नत भी हुआ और अब मैं राज्य प्रमुख का प्रथम अधिकारी हूं, तो आप ही बताइए मैं राज्य विकास तथा जनता के आवेदनों में अपना समय क्यों व्यर्थ करूं। राजा और दरबारी कार्यालय से बाहर आ गए।

बाहर निकलकर दरबारी ने राजा से पूछा कि कहीं और चलें, राजा ने सिर हिलाकर अपनी असहमति प्रकट की। नगर दर्शन के पश्चात राजा वापस अपनी राजधानी पहुंचा, अगले ही दिन उसने बिना देर किए कार्मिक मंत्री को बुलाकर आदेश दिया कि ऐसे तमाम लोग जो पिछले वर्षों दंडित हुए हैं,

उनकी गलतियों के अतिरिक्त राज्य विकास में उनका क्या योगदान रहा, इन सबका प्रतिवेदन बनाकर प्रस्तुत किया जाए। कुछ दिनों के बाद राजा के पास जब यह प्रतिवेदन पहुंचा तो उन्होंने देखा कि ऐसे कई कर्मचारी जिन्होंने राज्य के राजस्व में करोड़ों का संवर्धन किया, कभी छोटे सी गलती के कारण उन्हें कड़ा दण्ड दिया गया था और ऐसे कई कर्मचारी जिनका राज्य के विकास में कोई प्रत्यक्ष योगदान नहीं था, प्रोन्नत होकर राज्य के उच्च पर आसीन थे। राजा ने तुरन्त अपने इस दृष्टिकोण में परिवर्तन किया और आदेश दिया कि जब किसी पर दण्डात्मक कार्यवाही की जाए तो उसकी समग्रता से जांच हो और राज्य विकास में उसका योगदान अपराध पूर्व कैसा रहा, इस पर भी सजा निर्धारण से पूर्व जरूर विचार किया जाए। समय लगा, परन्तु कुछ ही समय में राजा को कर्मठ, परिश्रमी और खुशामदी लोगों का पता चल गया और राज्य में कार्य संस्कृति फिर बहाल हुई। राज्य खुशहाली की तरफ अग्रसर होने लगा।

अनुशासन किसी पर थोपे जाने की विषय-वस्तु नहीं है। अनुशासन का अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है, कि छोटी सी गलती पर भी सजा का प्रावधान किया जाए। अनुशासन कभी भी राज्य तथा व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता और न ही दण्ड का भय से सभी को अनुशासित रखा जा सकता है। अनुशासन मनुष्य तथा राज्य की आवश्यकता है न कि मनुष्य अनुशासन के अधीन। दरबारी ने राजा को यह समझा दिया कि अनुशासन आवश्यक है, परन्तु मनुष्य से ईश्वर की तरह त्रुटिहीन व्यवहार की अपेक्षा रखना भी उतना ही गलत है। राज्य मनुष्य के प्रबन्धन से चलता है और उसे मौलिक रूप से अनुशासित और ईमानदार होना चाहिए और यह भी आवश्यक नहीं कि कोई गलती किसी व्यक्ति के मौलिक चरित्र का हनन करती हो। कोई भी राज्य तभी सफल हो सकता है, जब राजा को नीर-क्षीर का विवेक हो।

बहुत चंचल, बहुत खुशनुमा सी होती है बेटियां,
नाजुक सा दिल रखती है मासूम सी होती है बेटियां।
बात-बात पर रोती है नादान सी होती है बेटियां,
है रहमत से भरपूर खुदा की नैमत में बेटियां।
घर भी महम उठता है जब मुस्कुराती है बेटियां,
होती है अजीब सी तकलीफ, जब छोड़के चली जाती है बेटियां।
बाबुल की लाडली होती हैं बेटियां, यह हम नहीं कहते,
यह तो खुदा कहता है कि जब मैं बहुत खुश होता हूं तो पैदा होती हैं बेटियां।

फैसिलिटेटर
अनु चौहान, बरौला

"जब मेरा सपना साकार हुआ"

मेरा नाम सन्तोष है। मैं पिछले काफी समय से बच्चों के साथ जुड़ी हुई हूं। मैं बचपन से ही यह चाहती थी कि मैं कोई ऐसा कार्य करूं जिससे मुझे मन को शान्ति मिले।

इसी समय जब मैं निठारी में आई तो मुझे इस प्रकार के बच्चे मिले जो न तो स्कूल जाते थे, और चोरी भी करते थे जिससे वे गलत आदत सीखते थे। मुझे लगा कि आज मेरे पास मौका है कि मैं इन बच्चों के लिए कुछ ऐसा करूं जिससे इनका भविष्य उज्जवल हो सकें।

इसके तहत मैंने अपनी दीदी से बात की जो कि निठारी की प्रधान है तथा मैं भी उनकी ही तरह समाज सेवा करना चाहती थी। तब उन्होंने मुझे बताया गया कि हमारे निठारी में बारातघर में "उगता सूरज" नाम से एक सेन्टर चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को निशुल्क शिक्षा देकर पढ़ने के लिए तैयार किया जाता है। तब मैं इससे जुड़ी और इन बच्चों को जो स्कूल नहीं जाते यहां लाकर उन्हें पढ़ाने पढ़ने के लिए तैयार करने लगी हूं। अब ये बच्चे भी यहां आकर खेल-खेल में पढ़ना लिखना सीख रहे हैं। मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूं। आज मैं बहुत खुश हूं तथा 'उगता सूरज' सेन्टर की आभारी हूं जिसने मुझे अपना सपना पूरा करने का मौका दिया।

सन्तोष शर्मा
उगता सूरज सेन्टर
ग्राम निठारी सेक्टर 31

मेरी कलम से...

मेरा नाम संजू झा है। मैं बिहार की रहने वाली हूं। मैं जब पढ़ती थी तो तो मेरा मन भी बच्चों को पढ़ाने का करता था। बाद में मैं जब निठारी में रहने लगी तो एक स्कूल में पढ़ाने गई मैंने वहां लगभग 5 साल काम किया लेकिन कुछ बच्चे ऐसे मिलते थे मैं पूछती थी तुम क्यों नहीं स्कूल जाते हो तो कहता था मेरी मम्मी के पास पैसा नहीं मुझे सुनकर ऐसा लगता था काश मैं ऐसा काम करता जो ऐसे बच्चों को पढ़ने का मौका मिलता क्योंकि मुझे समाज सेवा में भी रुचि थी।

लेकिन एक दिन ऐसा मौका आया जो सदरग का उगता सूरज एनजीओ में काम करने का मौका मिल गया 2007 से मैं उगता सूरज में काम करने लगी उसके बाद हर साल 50 बच्चों को फ्री पढ़ाती हूं साथ में उसका स्कूल में एडमिशन करवाती हूं। जिस कारण मुझे बहुत अच्छा लगता है।

मैं जब से उगता सूरज आई मुझे बहुत सीखने को मिला क्योंकि पहले मैं किसी से बोलने में डरती थी लेकिन अब वे सब डर खत्म हो गई और जो सपना था समाज सेवा का वह मौका भी मिला अब मैं बहुत खुश हूं।

संजू झा
उगता सूरज, निठारी
सेक्टर 31

नन्हीं बच्ची

नन्हीं बच्ची हंसकर बोली
मैं भी शिक्षा पाऊंगी
कल से पढ़ने जाऊंगी
प्रॉमिस प्लीज करो पापा
पूरी फीस भरो पापा।
यूनिफार्म सिला दो मुझको
बाटल, टिफिन दिला दो मुझको
बैग नया लेकर आना पापा
ऑटो भी तय कर आना पापा।
नन्हीं बच्ची ने विश्वास दिलाया
पापा को कहकर समझाया
चांस मुझको दे दो बस एक
पापा सदा रखूंगी नेक।
नन्हीं बच्ची मां को काम करते
ले बस्ता पढ़ने भी जाती।
मेहनत की उसने दिन रात
पापा की रखती थी बात
फिर से फेल हुआ भैया
मेरिट में अव्वल भी नन्हीं बच्ची।

झूमा चौधरी
फैसिलिटेटर, हरोला

मेरा नाम किशन कुमार है। मेरे पिताजी का नाम विरेन्द्र प्रसाद है। मेरी माताजी का नाम मुन्नी है हमारा परिवार एक गरीब घर से जुड़ा है मेरे पिताजी किसान है। मेरी माताजी गृहणी है। मेरा एक बड़ा भाई है जिसका नाम ज्योतिष है। वह पढ़ता है। मुझसे छोटा एक भाई है जिसका नाम नितीश है मुझे खाने में सबसे अच्छा केला लगता है मेरा सबसे प्रिय खेल कबड्डी है उसे खेलकर मैं अपने शरीर को तन्दुरस्त बनाता हूं।

मैं बड़ा होकर सिपाही बनना चाहता हूं।

किशन कुमार
उगता सूरज, हरोला, वर्ष 12

Sanju Kumar
11 years

मेरा नाम इन्द्रजीत है। मैं 14 साल का हूं मैं निठारी में रहता हूं। चार साल पहले की बात है मेरे पिताजी बीमार रहते थे और मेरी मां कोठी में काम करने जाती थी तब मैं अपने छोटे भाई बहन को घर में संभालता था और पास ही राशन की दुकान पर भी काम करता था, लेकिन मेरी इच्छा केवल पढ़कर आगे बढ़ने की थी। जब संजू मैम मुझे 'उगता सूरज' पर लाई और मुझे पढ़ना लिखना सिखाया फिर सदरग एनजीओ की मदद से मुझे नोयडा पब्लिक स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। तब से मैं वहीं चौथी कक्षा में पढ़ रहा हूं। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मैं बड़ा होकर अच्छा इंजीनियर बनना चाहता हूं यह मेरा सपना है।

इन्द्रजीत
कक्षा-IV, नोयडा पब्लिक स्कूल
उगता सूरज, सेक्टर 31, निठारी

मेरी कहानी

मेरा नाम ज्योती है। मैं 10 साल की हूं। पहले मैं सरकारी स्कूल में जाती थी। मगर वहां मुझे अच्छा नहीं लगता था वहां टीचर ठीक से पढ़ाती नहीं थी। इसलिए मैं वहां से निकलकर उगता सूरज सेन्टर में आ गई। यहां टीचर रोज आते हैं और पढ़ाते हैं मुझे पढ़ना पसन्द है। मैं बड़ी होकर कुछ बनना चाहती हूं।

– ज्योती

वर्ष 10, उगता सूरज, नागला सेन्टर

अदभुत अनुभव

मेरा नाम सोनी है। मैं निठारी में रहती हूं। मैं उगता सूरज सेन्टर पर ए.वाई.वी. की क्लास करने जाती हूं। जहां हमें कैमरा चलाना सिखाया जाता है। वह मीडिया बनाना सिखाया जाता है। हमारे कम्युनिटी में लड़कियों को ज्यादा आजादी नहीं मिलती। कहीं आने-जाने के लिए मगर ए.वाई.वी. की सहायता से हमें अब बाहर जाने का अवसर मिलता है। एक दिन हम सब बच्चे दिल्ली हाट गए थे जहां हमने नारी की चौपाल में नाटक प्रस्तुत किया था। ऐसा अवसर मुझे ना कभी मिला है और ना ही मिलेगा।

– सोनी

ए.वाई.वी., निठारी

गरीमा की कहानी

मेरा नाम गरीमा है। मैं 10 साल की हूं। मेरी माँ का नाम मेमनती देवी हैं और पिता का नाम सतवीर है मैं नागला में रहती हूं। मैं प्राईवेट स्कूल में पढ़ती थी मगर घर में पैसों की तंगी की वजह से मेरी माँ ने मेरा नाम वहां से कटवा दिया अब मैं उगता सूरज सेन्टर नागला में पढ़ने आती हूं। यहां मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं बड़ी हो के अपने टीचर जैसी बनना चाहती हूं।

– गरीमा

वर्ष 10, उगता सूरज, नागला सेन्टर

सभी इंसान के अन्दर एक खास इच्छा रहती है। मेरी भी ऐसी ही एक इच्छा थी Teaching को अपना Profession बनाने का। कारण मैं यह मानती हूं सारे Profession में पैसा कमाना ही main motto होता है। But teaching profession में पैसे के साथ-साथ हम समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का पालन कर सकते हैं।

हमारी country में बहुत बड़े-बड़े teacher, Professor हैं लेकिन देखा जाए तो इनसे शिक्षा लाभ सिर्फ एक श्रेणी के इंसान ही अपने बच्चों को दे सकते हैं। इसलिए मैं यही मानती हूं उस श्रेणी के एक बच्चे को अगर मैं अपनी सामान्य शिक्षा न देकर जो हमारे समाज के Neglected पांच बच्चों को दूं तो मेरा Initiative sussessful होगा।

और यह Chance मैं अपना NGO SADRAG के द्वारा पूरा कर सकती हूं। और मैं यही चाहती हूं कि अपनी इच्छा और भी दूर तक ले जाऊं।

झूमा

फैसिलिटेटर, उगता सूरज, हरोला

मेरा नाम शहजाद है मैं 10 साल का हूं मेरे पिताजी मुझसे साइकिल का काम करवाते थे लेकिन मैं पढ़ना चाहता था, तब मैं उगता सूरज सेन्टर निठारी पर आया जहां मैंने पढ़ना-लिखना सीखा। अब मैं दुर्गा पब्लिक स्कूल की चौथी कक्षा में पढ़ता हूं, और मैंने साइकिल की दुकान पर काम करना भी छोड़ दिया है। अब मैं अच्छे से पढ़ाई करता हूं मेरा सपना बड़े होकर डॉक्टर बनने का है।

शहजाद

उगता सूरज, निठारी, सेक्टर 31

मेरा नाम रासिद अंसारी है। मेरे पापा का नाम अलिम अंसार है। वह एक पेन्टर हैं मेरी मम्मी का नाम सलमा खातुन है। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बनना चाहता हूं। और गरीबों का इलाज करना चाहता हूं। जिसके पास पैसा नहीं है उनके लिए मैं फ्री में इलाज करना चाहता हूं।

मैं हरोला सेक्टर 5 नोयडा में रहता हूं। मैं उगता सूरज में पढ़ता हूं। मेरी मैम हमारा बहुत ध्यान रखती हैं। हमें बहुत अच्छे से पढ़ाती है।

रासिद

वर्ष 12, उगता सूरज, हरोला

मेरा नाम प्रियंका है मेरे पापा का नाम आनन्द कुमार जी है।

वह एक प्रेसमैन हैं। मेरी मम्मी का नाम रंजना कुमारी है। मेरी मम्मी एक गृहणी है। मैं उगता सूरज सेन्टर में पढ़ती हूं। मैं बड़ी होकर डान्सर बनना चाहती हूं और गरीब लोगों को डान्स सिखाना चाहती हूं।

प्रियंका

वर्ष 11, कक्षा-1, नवीन पब्लिक स्कूल, हरोला

मैं उगता सूरज में पढ़ती हूं। मेरा नाम लक्ष्मी कुमारी है। मैं 11 साल की हूं। मेरे पिताजी का नाम राधेश्याम हैं। मेरी माता का नाम सबिता है। मेरे पिताजी कोठी में मरीज की देखभाल करते हैं। मेरी माताजी कोठी में घर का काम करती हैं। हम दो भाई बहनें हैं। मुझे पढ़ना अच्छा लगता है। इसलिए मैं अपनी बहन पमा के साथ उगता सूरज सेन्टर पर पढ़ने खेलने आती हूं।

लक्ष्मी कुमारी

उगता सूरज, निठारी, सेक्टर 31

चुटकुला

भिखारी एक घर के दरवाजे को ठक-ठकाते बोलता है- खाना दे दो।

अन्दर से आवाज आती है- अम्मी घर में नहीं है।

भिखारी बोलता है- बेटा मैं खाना मांग रहा हूं।

मम्मी नहीं।

शाहरूख

वर्ष 14, कक्षा 7

नोयडा पब्लिक स्कूल, हरोला

Himanshu

Rinki
IIIrd,
Baraula
Sec. 49

Sonali
IInd
Barola Centre
Sec. 49

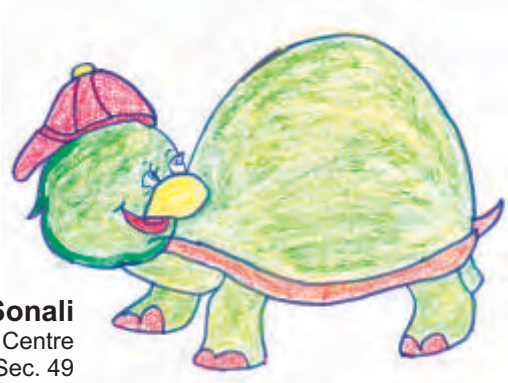

Sonali
Barola Centre
Sec. 49

Ankush
1st, Baraula

Harilal Gautam
10 years

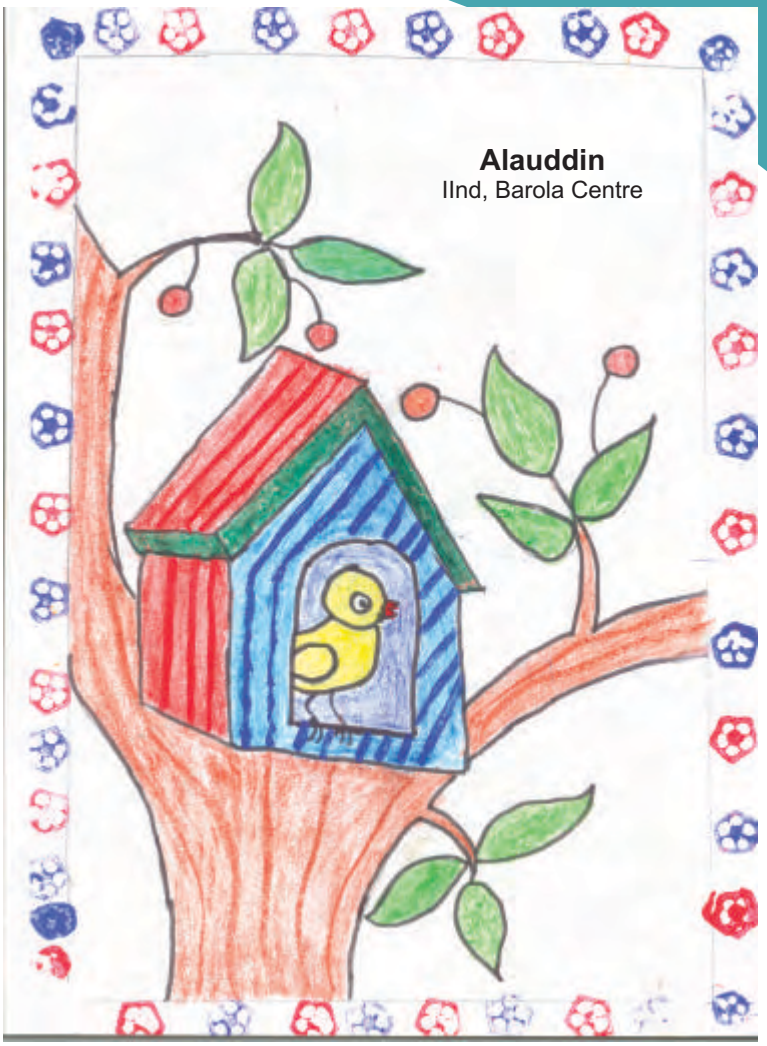

Alauddin
IInd, Barola Centre

अभिषेक कुमार
11 साल
उगता सूरज सेन्टर,
सेक्टर 31

Pappu Kumar
IInd, Agghapur, Sector 41

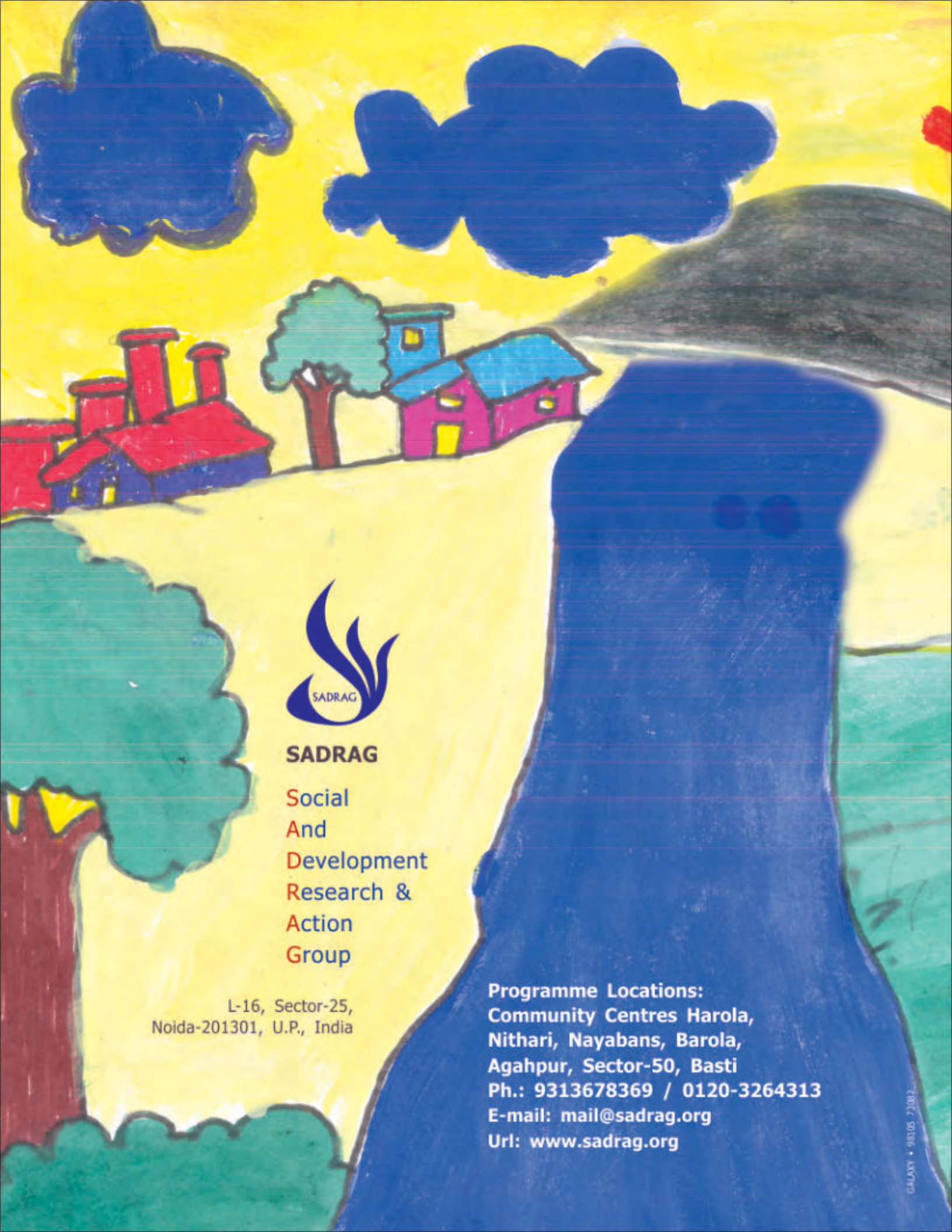

SADRAG

Social
And
Development
Research &
Action
Group

L-16, Sector-25,
Noida-201301, U.P., India

Programme Locations:
Community Centres Harola,
Nithari, Nayabans, Barola,
Agahpur, Sector-50, Basti
Ph.: 9313678369 / 0120-3264313
E-mail: mail@sadrag.org
Url: www.sadrag.org